प्रकाशन तिथि : 15 फरवरी, 2022
प्रेषण तिथि : 19 फरवरी, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 23 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

जोधपुर और बालोतरा में स्नेहमिलन सम्पन्न

जोधपुर स्थित संभागीय कार्यालय तनायन में 30 जनवरी को संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के सान्निध्य में स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु सम्मिलित हुए। इस दौरान कार्यालय में नवनिर्मित पुस्तकालय का उद्घाटन भी माननीय संरक्षक श्री द्वारा किया गया। केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। 30 जनवरी को ही बालोतरा स्थित वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में भी स्नेहमिलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक श्री ने कहा कि हीरक जयन्ती कार्यक्रम के माध्यम से क्षत्रिय का रूप निखर कर सबके सामने आया। इसके लिए हमें ईश्वर का आभारी होना चाहिए क्योंकि ईश्वर की सद्प्रेरणा से ही हीरक जयन्ती का कार्यक्रम सफल हो सका। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'कल्पना की उड़ान पूरी करने को उड़ना शुरू करें'

(तनायन, जोधपुर में 30 जनवरी को आयोजित स्नेहमिलन में माननीय संरक्षक श्री के उद्बोधन का संपादित अंश)

करीब एक साल पहले हीरक जयन्ती की योजना बनी थी। फिर अड़चन आ गई कोरोना के कारण, तो भूल गए थे कि ऐसा कार्यक्रम हो सकेगा। भगवान ने अनुकूलता प्रदान की, सरकार ने लॉकडाउन हटा दिया। समय बहुत कम रह गया था। बाड़मेर से मैंने पता किया, जयपुर से पूछा, अब क्या करेंगे, संघप्रमुख श्री से पूछ कर मुझे बताओ तो जवाब मिला कि अब तो क्या हो सकता है, बहुत थोड़ा समय है, छोटे-छोटे रूप में मना लेंगे। कोई जोधपुर में, कोई जयपुर में। मैं भी यही मान रहा था लेकिन मैंने थोड़ी हिम्मत बंधाई कि इस प्रकार से निराश होना श्री क्षत्रिय युवक संघ के लोगों को शोभा नहीं देता। तन सिंह जी ने हमको जो शिक्षा दी है, उसका हमको सदुपयोग करना चाहिए। थोड़ी हिम्मत रखो और हिम्मत रखने वालों को भगवान सहायता करता है। तुरत-फुरत में अनुमति ली गई, भवानी निकेतन से भी और सरकार से भी। कोई अड़चन नहीं आई। जहां-जहां सहायता की आवश्यकता होती थी मिलती गई। दस दिन पहले से तैयारियां देखने मैं लगभग प्रतिदिन जाता था। सफाई करने के लिए कुछ स्वयंसेवक लगे हुए थे, पूरे राजस्थान से लोग आए हुए थे। सफाई कर्मचारियों की तरह से बल्कि उन से भी बेहतर ढंग से पूरी भवानी निकेतन को साफ किया और भवानी निकेतन के अध्यक्ष और संरक्षक महोदय जालम सिंह जी से अनुमति ली कि यह जो पेड़ हैं, उनके कारण अड़चन आ रही है, उनको बीच-बीच से कहीं कटाई-छंटाई करनी पड़ेगी। आप अनुमति देंगे तो करेंगे नहीं तो जैसे-तैसे काम चलाएंगे तो उन्होंने कहा कि काटना पड़े तो काट दो। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

मेवाड़ व वागड़ क्षेत्र के सहयोगियों की बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उदयपुर- राजसमंद, चित्तोड़गढ़, भीलवाड़ा व वागड़ क्षेत्र के नवनियुक्त सहयोगियों की प्रथम बैठक 30 जनवरी को उदयपुर में रखी गई। बैठक में केन्द्रीय बैठक पुष्कर में तय की गई कार्ययोजना पर बिंदुवार विस्तार से चर्चा की गई। उन बिंदुओं पर जिला स्तर पर कार्य करने के लिए सहयोगियों ने दायित्व लिया एवं उसके तहत क्या क्या कार्यक्रम किए जा सकते हैं इसकी योजना बनाई गई। सामूहिक बैठक के बाद जिला अनुसार अलग अलग बैठकर चर्चा की गई एवं कार्यक्रम तय किए गए। बैठक में केन्द्रीय समिति के सदस्य एवं प्रादेशिक परिवहन अधिकारी प्रकाश सिंह भदरू ने कहा कि हमारा पूरा

प्रयास सकारात्मक सहयोगी ढूंढने पर होना चाहिए। हम ऐसा प्रयास करें कि प्रत्येक गांव में हमारा एक सहयोगी तैयार हो सके जिससे हम समाज के हर व्यक्ति तक अपनी पहुंच बना सकें और संघ का संदेश पहुंचा सकें। इसके लिए हमें अधिक से अधिक कार्यक्रम करने पड़ेंगे, छोटे छोटे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के हर वर्ग से संपर्क करना पड़ेगा एवं उनमें से रुचि वाले लोगों को सहयोगी बनाना पड़ेगा। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

माननीय संरक्षक श्री का सीकर प्रवास

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर 5 फरवरी को सीकर प्रवास पर रहे। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक स्वर्गीय रतन सिंह नंगली के आवास पर पहुंच कर उनके परिजनों से मुलाकात की व रतन सिंह जी के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट की। वहां से 1 फरवरी को दिवगंत हुए वयोवृद्ध स्वयंसेवक स्वर्गीय केसरी सिंह जी खोरी के आवास पर पहुंचे तथा परिजनों से मिलकर सांत्वना प्रदान की। वहां पर स्वामी रामसुखदास जी के शिष्य डूंगरदास जी महाराज से भी संरक्षक श्री की भेंट हुई। वहां से रवाना होकर सीकर

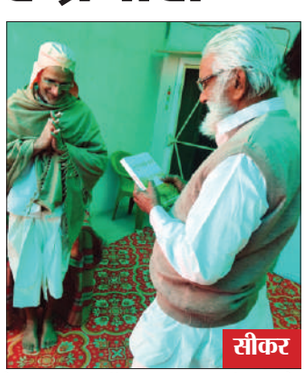

के निकटवर्ती गांव कासली पहुंचे जहां संघ के स्वयंसेवक घीसू सिंह कासली की पुत्रियों के विवाह समारोह में सम्मिलित हुए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पाली जिले में आगे बढ़ रही 'शिक्षा नेग' की पहल

राजपूत समाज के आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभावान विद्यार्थियों की शिक्षा को निरंतर जारी रखने के उद्देश्य से स्थापित राजपूत शिक्षा कोष ट्रस्ट द्वारा 'शिक्षा नेग' की पहल निरंतर आगे बढ़ रही हैं। हाल ही में पाली जिले के साकदड़ा, बोया, कुरना, बाला, सुरपुरा, ठाकुरवास आदि गांवों के समाज बन्धुओं ने विवाह कार्यक्रम के दौरान शिक्षा नेग के रूप में ट्रस्ट को सहायता राशि भेंट की। साकदड़ा में जगवीर सिंह ने अपने पुत्र के विवाह में न केवल 'शिक्षा नेग' के रूप में सहयोग राशि भेंट की बल्कि कन्या पक्ष की ओर से दी गई टीके की रकम भी लौटा कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। कन्या पक्ष की ओर से उत्तम सिंह कुरना ने बालिका शिक्षा के लिए 'शिक्षा नेग' के रूप में आर्थिक सहयोग दिया। इसी प्रकार बाली तहसील के बोया गांव में मदन मोहन सिंह ने अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में सहयोग राशि भेंट की। सुखवीर सिंह बोया ने भी शिक्षा नेग के लिए योगदान किया। कन्या पक्ष के लाल सिंह ठाकुरवास ने भी सहयोग राशि भेंट की। बाला गांव में डूंगर सिंह की पौत्री के विवाह में डूंगर सिंह ने तथा वर पक्ष के लाल सिंह सुरपुरा व जोग सिंह सुरपुरा ने शिक्षा नेग भेंट किया। पूर्व सांसद व 'शिक्षा नेग' पहल के प्रणेता नारायण सिंह माणकलाव ने सभी का आभार प्रकट किया। अभी तक सामान्यतया विवाह समारोह में ही शिक्षा नेग भेंट किया जाता रहा है लेकिन पाली जिले में द्वादशे पर मृत्युभोज के स्थान पर शिक्षा नेग भेंट करने की एक नई व अनुकरणीय पहल की गई है। इस के अंतर्गत पाली के सोवनिया गांव में स्वर्गीय कंचन कँवर के द्वादशे पर उनके पति पदम सिंह, पुत्र वीरेन्द्र सिंह व परिवारजनों ने दिवंगत आत्मा की स्मृति में राजपूत शिक्षा कोष पाली को आर्थिक सहयोग भेंट किया। सभी उपस्थित समाजबंधुओं ने इस पहल की सराहना की व स्वयं भी ऐसा करने का संकल्प जताया। राजपूत शिक्षा कोष की ओर से भी अनेक कार्यकर्ता इस दौरान उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व कान सिंह (अधिशाषी अभियंता, जलदाय विभाग) ने भी स्वर्गीय डॉ जयदीप सिंह की स्मृति में शिक्षा नेग भेंट करके पाली जिले में मृत्युभोज पर शिक्षा नेग की यह नई परंपरा प्रारम्भ की थी।

महाराजा गंगासिंह जी की पुण्यतिथि पर विचार गोष्ठी का आयोजन

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की बीकानेर टीम द्वारा श्री सार्दुल राजपूत छात्रावास में महाराजा गंगा सिंह जी की पुण्यतिथि पर 2 फरवरी को एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें गंगा सिंह जी के जीवन परिचय और प्रजा के हित में उनके द्वारा किये गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय समिति के सदस्य जुगल सिंह बेलासर ने बैठक को संबोधित करते हुए महाराजा गंगासिंह जी की धर्मपरायणता, कर्तव्यपालन, न्यायप्रियता के बारे में बताते हुए कहा कि आज बीकानेर में जो साधन, सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं उनमें और बीकानेर का आधुनिकीकरण करने में महाराजा गंगा सिंह जी का बहुत बड़ा योगदान है। जितेंद्र सिंह बीरान ने महाराजा गंगा सिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया और बताया कि उन्होंने बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में भी सहयोग किया एवं आजीवन वाइस चांसलर रहे। छात्र प्रतिनिधि शैलेंद्र सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। डॉ नरेंद्र सिंह मेड़तिया, अनिल सिंह, सूरज भान सिंह, बजरंग सिंह, गोपाल सिंह सहित छात्रावास के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

महाराणा सांगा की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

महाराणा सांगा की पुण्यतिथि पर 30 जनवरी को श्री सार्दुल राजपूत छात्रावास, बीकानेर में कार्यक्रम रखा गया जिसमें वीरता, शौर्य व उदारता के प्रतीक महाराणा संग्राम सिंह को श्रद्धांजलि दी गई। जितेंद्र सिंह बीरान ने महाराणा सांगा का परिचय प्रस्तुत किया। 30 जनवरी को ही जोधपुर के संगरिया में भी राणा सांगा की पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें संघ के स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने महाराणा सांगा के संघर्ष को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी।

वीरवर चांपा जी की 610वीं जयंती मनाई

नागौर जिले के मेड़ता तहसील के हरसोलाव गांव में चांपावत कुल के मूल पुरुष वीरवर राव श्री चांपा जी की 610वीं जयंती 4 फरवरी को मनाई गई जिसमें ग्रामवासियों द्वारा चांपा जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई तथा उनके शौर्यपूर्ण जीवन को स्मरण करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। डूंगर सिंह व वीरेंद्र सिंह हरसोलाव ने कार्यक्रम की व्यवस्था में सहयोग किया। इसके अतिरिक्त भी अनेक जगह जयंती मनाई गई। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर ट्विटर स्पेस के माध्यम से जयंती मनाई गई जिसमें सैंकड़ों लोग जुड़े।

महाराणा प्रताप व मेवाड़ की वीर गाथा को आमजन तक पहुंचाने का अभियान

चित्तौड़गढ़ जिले की बड़ी सादड़ी तहसील के तलावदा गांव निवासी वीरेंद्र सिंह महाराणा प्रताप व मेवाड़ के अन्य बलिदानी महापुरुषों की वीरगाथा को आमजन तक पहुंचाने के अभियान में जुटे हुए हैं। इस अभियान के तहत वे अब तक महाराणा प्रताप की 50 हजार से अधिक तस्वीरें वितरित कर चुके हैं। चित्तौड़ के जौहर मेले में आने वालों को महाराणा प्रताप की तस्वीरें भेंट करने के अतिरिक्त जौहर संस्थान में फोटो गैलरी में महाराणा प्रताप सहित अन्य वीर, वीरांगनाओं की तस्वीरें भी वीरेंद्र सिंह ने लगवाई हैं। भीलवाड़ा में कुंभा ट्रस्ट में भी फोटो गैलरी इनके द्वारा लगवाई गई है। इसके अतिरिक्त बड़ी सादड़ी, बेगूं के कई विद्यालयों में भी महाराणा प्रताप की तस्वीरें उनके इतिहास के साथ इन्होंने उपलब्ध कराई। तस्वीरों के अतिरिक्त वे वार्षिक कैलेंडर भी बनवा कर आमजन में वितरित करवा रहे हैं जिनमें मेवाड़ के महापुरुषों का इतिहास व चित्र समाहित है। वीरेंद्र सिंह तलावदा श्री क्षत्रिय युवक संघ के सक्रिय स्वयंसेवक हैं तथा हाडोती प्रांत के प्रांत प्रमुख हैं। महाराणा प्रताप के इतिहास को आमजन तक पहुंचाने के इस अभियान के अतिरिक्त वीरेंद्र सिंह अन्य सामाजिक कार्यों में भी आगे रहते हैं। वे अपने क्षेत्र में विधवा महिलाओं की आर्थिक सहायता, रक्तदान शिविर आदि अनेक गतिविधियों में भी सहयोग कर रहे हैं।

मृत्यु भोज न करने का निर्णय

सीकर जिले के नाथावतपुरा गांव के निवासी अमर सिंह एवं विक्रम सिंह ने अपने पिता स्वर्गीय माल सिंह के निधन के पश्चात मृत्यु भोज का आयोजन न करने का निर्णय लेकर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत किया।

पूज्य तनसिंह जी जयन्ती के उपलक्ष्य में सामाजिक चिन्तन बैठक का आयोजन

गुजरात में सौराष्ट्र संभाग के कच्छ प्रांत के अंतर्गत रापर तहसील के गेडी गांव में 30 जनवरी को पूज्य श्री तनसिंह जी की जयंती के उपलक्ष में सामाजिक चिंतन बैठक का आयोजन हुआ। प्रान्त प्रमुख वनराज सिंह भैंसाणा ने पूज्य तनसिंह जी व श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए समाज में संघ कार्य के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में पधारे समाज बंधुओं को संघ साहित्य और यथार्थ गीता भी भेंट की गई। गांव के समाजबंधुओं द्वारा गांव में शाखा प्रारंभ करने का निर्णय भी लिया गया। दीवान सिंह गेड़ी ने हिंगलाज माताजी सेवा संगठन की गतिविधियों के बारे में बताया। यहां से प्रांत प्रमुख सहयोगियों सहित निकटवर्ती बेला गांव पहुंचे जहां ग्रामवासियों से संघ के संबंध में चर्चा की। यहां भी शाखा प्रारंभ करने के लिए ग्रामवासियों ने तत्परता दिखाई। वापसी में प्रांत प्रमुख ने संतालपुर तहसील के पर गांव की शाखा का भी दौरा किया। 30 जनवरी को ही बनासकांठा प्रांत में तेनीवाडा स्थित शिव मंदिर में भी पूज्य तनसिंह जी की 98वीं जयंती के उपलक्ष में कार्यक्रम रखा गया जिसमें रामसिंह धोता सकलाणा व किरण सिंह मेजरपुरा

गेड़ी

तेनीवाड़ा

ने पूज्य तनसिंह जी व संघ के संबंध में जानकारी प्रदान की। गोहिलवाड़ संभाग में भावनगर प्रांत के गुंदी गांव में 27 जनवरी को जयंती मनाई गई। 28 जनवरी को भाल प्रांत के कादीपुर गांव में तथा भावनगर की पार्थ शाखा में भी जयंती मनाई गई।

विद्यालयों में यथार्थ गीता का वितरण

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक महोदय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के निदेर्शानुसार हर घर तक गीता पहुँचाने के अभियान के अंतर्गत पूज्य अड़गड़ानंद जी महाराज कृत यथार्थ गीता की लगभग 1500 प्रतियों का वितरण बाड़मेर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में किया गया। केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक नरपत सिंह चिराणा द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय विशाला, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नांद, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुरा जागीर, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दुदाबेरी तथा वीर तेजाजी उच्च माध्यमिक विद्यालय नांद में अध्ययनरत कक्षा 8 से 12 के विद्यार्थियों एवं विद्यालय स्टाफ को यथार्थ गीता भेंट की गई।

हरियाणा के हिसार में स्नेहमिलन आयोजित

हीरक जयंती समारोह के बाद लोगों में संघ को जानने एवं समझने की उत्सुकता बढ़ी है और इसीलिए सभी क्षेत्रों से संघ के कार्यक्रम करने की मांग आ रही है। इसी के तहत हरियाणा के हिसार क्षेत्र से समारोह में आये लोगों ने उनके यहां कार्यक्रम रखने का मानस बनाया। हिसार में निवासरत SKPF में सहयोगी अरविंद सिंह बालवा ने उन सब में समन्वय किया और 6 फरवरी को अपराह्न हिसार स्थित श्री राजपूत धर्मशाला में एक स्नेहमिलन रखा गया जिसमें हिसार में निवासरत समाज बंधुओं के साथ साथ आस पास के गांवों व जिलों से भी समाज बंधु शामिल हुए। स्नेहमिलन में संघ का परिचय देते हुए बताया गया कि हम हमारे आस पास दो तरह के लोग देखते हैं। एक वे लोग हैं जो इतने अधिक व्यक्तिवादी हैं कि उन्हें अपने अलावा परिवार, समाज, राष्ट्र से कोई लेना देना नहीं है। दूसरी प्रकार के वे लोग हैं जो अपने अलावा परिवार, समाज,

राष्ट्र और संसार के अभावों के बारे में सोचते हैं, चिंतन करते हैं और आपसी बातचीत में ऐसे अभावों पर चिंता व्यक्त करते हैं। हमारे में से अधिकांश लोग इसी श्रेणी में आते हैं लेकिन हम मात्र कमियां बता कर रुक जाते हैं, चिंता व्यक्त कर इतिश्री कर लेते हैं। पू. तनसिंह जी को भी ऐसे ही अभाव नजर आये लेकिन वे केवल चिंता व्यक्त करने तक ही नहीं रुके बल्कि उन अभावों के कारण को खोजा। उन्होंने पाया कि क्षत्रिय समाज में अभावों का मूलभूत कारण क्षत्रियत्व का अभाव हो जाना है और इसीलिए उन्होंने क्षत्रियत्व के शिक्षण के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं को पूज्य तनसिंह जी का जीवन परिचय दिया गया एवं संघ की कार्यप्रणाली की जानकारी देते हुए बताया गया कि किस प्रकार संघ पूज्य तनसिंह जी के सपनों को साकार करने के लिए प्रयत्नशील है।

उपस्थित संभागीयों से हुई अनौपचारिक चर्चा में उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के जबाब में बताया गया कि संघ का यह मानना है कि आज राष्ट्र में व्याप्त अव्यवस्था का कारण हमारी उदासीनता है। हम लोगों ने जगह खाली कर दी इसलिए अयोग्य लोगों के हाथों व्यवस्था का संचालन आ गया अतः हमें अपनी भागीदारी बढ़ानी चाहिए। हर क्षेत्र में हमें अपनी उपस्थिति बढ़ानी चाहिए लेकिन क्षत्रियत्व के आचरण के साथ। यदि हम अपने क्षत्रियत्व को जागृत किए बिना भागीदारी बढ़ायेंगे तो व्यवस्था में कोई सुधार नहीं होना इसलिए संघ का मूल कार्य क्षत्रियत्व का शिक्षण है। उपस्थित समाज बंधुओं ने हीरक जयंती को लेकर अपने सुखद अनुभव बताये एवं सभी ने संघ की मुख्यधारा से जुड़ कर हरियाणा में संघ के कार्य को गति देने का संकल्प जताया।

संपादकीय

घातक व्यक्तिनिष्ठता

किसी भी सिद्धांत का आधार कोई न कोई व्यक्ति ही होता है। आधार के बिना सिद्धांत एक अमूर्त विचार मात्र है लेकिन उसे मूर्तिमान बनाने के लिए किसी व्यक्ति के द्वारा ही उसे आचरित किया जाता है और तब ही वह अनुकरणीय बनता है। इस प्रकार व्यक्ति का अपना विशिष्ट महत्व है और वही महत्ता व्यक्ति को प्रधान बनाती है। लेकिन क्या सिद्धांत का प्रकटीकरण ही पर्याप्त है या उस सिद्धांत का हेतु क्या है, उसे भी समझना चाहिए। यदि वह हेतु खो जाये तो उसका किसी व्यक्ति के रूप में अवतरित होना या प्रकट होना भी निरर्थक हो जाता है। जैसे सच बोलना एक सिद्धांत है जो किसी व्यक्ति द्वारा सच बोलने से पुष्ट होता है लेकिन सच बोलना क्यों आवश्यक है, सच बोलने का क्या हेतु है यदि यह गौण हो जाये तो वह सत्य घातक हो जाता है। कृतज्ञ होना एक सिद्धांत है जो कर्ण जैसे व्यक्ति में अवतरित होता है लेकिन किसके प्रति और क्यों कृतज्ञ होना है वह हेतु खो जाए तो ऐसा कृतज्ञता ज्ञापन सृष्टि के लिए घातक बन जाता है। इस प्रकार सिद्धांत और उनका व्यक्ति में प्रकटीकरण महत्वपूर्ण है लेकिन इससे महत्वपूर्ण है कि वे सिद्धांत क्यों बनाये गए, उनका हेतु क्या रहा है?

यदि इस दिशा में सोचें तो यह सृष्टि परमेश्वर की रचना है और परमेश्वर चाहते हैं कि इसका समुचित संचालन होते हुए यह अपने सृष्टा की ओर गतिमान हो। इसके व्यवस्थित संचालन के लिए ही सिद्धांत बनाये जाते हैं। वे सिद्धांत विश्वात्मा के दृष्टिकोण से इस सृष्टि की आवश्यकता होते हैं और उन आवश्यकताओं की पूर्ति ही उन सिद्धांतों का हेतु होता है। लेकन जैसा पहले लिखा जा चुका है कि ये सिद्धांत किसी न किसी व्यक्ति में ही अवतरित होते हैं इसलिए यहां व्यक्ति महत्व पा जाता है। ऐसे व्यक्ति के प्रति सामान्य जन में एक आकर्षण उत्पन्न होता है, लोग उस व्यक्ति को पसंद करने लगते हैं, उसे नेता मानने लगते हैं और यहीं से व्यक्तिनिष्ठा पैदा होती है जो स्वाभाविक है। लेकिन जब उस सिद्धांत का हेतु खो जाता है, समाज या सृष्टि गौण हो जाती है, विश्वात्मा का दृष्टिकोण गौण हो जाता है और केवल वह व्यक्ति ही महत्व पा जाता है और सामान्य जन की उस व्यक्ति के प्रति निष्ठा ही महत्वपूर्ण हो जाती है तो ऐसी व्यक्तिनिष्ठा घातक हो जाती है। दुर्भाग्य से हमारा समाज सैंकड़ों वर्षों से ऐसी व्यक्तिनिष्ठा से पीड़ित है और समाज चरित्र गौण हो गया है। इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनमें इस व्यक्तिनिष्ठा ने समाज चरित्र पर महत्ता पायी और समाज रूप में, राष्ट्र के रूप में हमने मुंह की खाई। स्वार्थ और अहंकार का बल पाकर यह व्यक्तिनिष्ठा इतनी प्रबल हुई कि समाज और राष्ट्र की प्रत्यक्ष हानि की भी अवहेलना कर उसे होने दिया गया और कालांतर में समाज की तो हानि हुई ही लेकिन वे व्यक्ति भी अपना अस्तित्व नहीं रख पाये जिनके प्रति निष्ठा ने यह परिणाम घटित करवाया। लेकिन फिर भी समाज में ऐसी समाज निरपेक्ष व्यक्तिनिष्ठा के प्रति आकर्षण समाप्त नहीं हुआ और आज भी चहुंओर हमें ऐसे उदाहरण पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं जब व्यक्ति विशेष की समाज निरपेक्ष विशेषताओं पर समाज के लोगों को लट्टू होते देखा जा सकता है। जब कोई व्यक्ति किसी सरकार से या व्यवस्था से जूझता है, संघर्ष करता है तब हम यह जाने बिना कि उसका यह जुझारूपन कितना सामाजिक है, उसके प्रति नमनशील हो जाते हैं और उसके प्रति निष्ठावान बनकर समाज चरित्र की उपेक्षा करते हैं। यदि केवल जूझना या संघर्ष करना ही हमारी निष्ठता का पैमाना हो तो फिर हमें दुर्योधन के प्रति भी निष्ठा प्रदर्शित करनी चाहिए जो अंतिम समय तक हार नहीं मानता और अपनी बात पर अडिग रहते हुए जूझता रहता है। हमें रावण को भी आदर्श मानना चाहिए जो अपने पूरे कुल और सहयोगियों का विनाश होने के बावजूद अकेला ही अंतिम समय तक संघर्ष करता रहता है। यदि हम समाज निरपेक्ष व्यक्तिगत वीरता पर लट्टू होते हैं तब तो फिर हमें मेघनाद की वीरता पर भी लट्टू होना चाहिए जिसने अपनी वीरता के बल पर इन्द्र का पराभाव कर इन्द्रजीत की उपाधि पायी थी। हम केवल समाज निरपेक्ष भाई के प्रति समर्पण को ही श्रेष्ठ मानते हैं तो हमें कुंभकर्ण और दुःशासन को भी आदर्श मानना चाहिए। यदि हम बात पर अड़े रहने के गुण को ही हमारी निष्ठता की पात्रता मानते हैं तो फिर हमें रावण, दूर्योधन आदि को भी आदर्श मान लेना चाहिए। लेकिन हम ऐसा करते नहीं है और संपूर्ण जनमानस में इन्हें अनुकरणीय नहीं माना जाता। भाई के प्रति निष्ठा के उदाहरण के रूप में हम भरत और लक्ष्मण का उदाहरण देते हैं कुंभकर्ण या दुःशासन का नहीं। वीरता में हम अर्जुन का उदाहरण देते हैं दूर्योधन का नहीं। निडरता में हम जरासंध का उदाहरण नहीं देते बल्कि भीम का उदाहरण देते हैं क्योंकि इन सबके ये व्यक्तिगत गुण समाज निरपेक्ष नहीं थे बल्कि समाज की आवश्यकता पूरी कर रहे थे और यही इन गुणों की सार्थकता भी है। हमारे मध्यकालीन इतिहास में व्यक्तिगत गुणों की कमी नहीं थी। यहां तक की कुछ गुणों में तो हमने सीमाएं बांध दी लेकिन फिर भी समाज चरित्र का अभाव होने के कारण उनमें से अनेक के वे व्यक्तिगत गुण वृहद सामाजिक हितों के लिए घातक बन गये और उनसे समाज व राष्ट्र को हानि का सामना करना पड़ा।

आज भी हमारी स्थिति कोई बहुत अच्छी नहीं है। हमारे समाज में अनेक ऐसे महानुभाव हैं जो अपने आपको समाज से व समाज की आवश्यकताओं से बड़ा मानते हैं। वे किसी भी सामाजिक मयार्दा या अनुशासन को नहीं मानना चाहते। उनके अनुसार समाज को उनके पीछे चलना चाहिए, वे समाज से स्वयं को ऊपर मानते हैं और इसीलिए गाहे बगाहे वृहद् सामाजिक हित के विरुद्ध भी अपने अहंकार व स्वार्थ को तुष्ट करने के लिए कृत्य करने में शर्म महसूस नहीं करते। फिर भी केवल इसलिए हम किसी ऐसे व्यक्ति को अपनी पसंद बनायें कि वह दबंग है, वह जुझारू है, वह आपका कोई व्यक्तिगत काम करवा देता है या वह किसी पद पर पहुंच गया है या पहुंच गया था तो ऐसे में हम समाज चरित्र को क्षीण कर रहे होते हैं और केवल हमारी आकलन क्षमता की अपरिपक्वता, हमारे किसी छोटे से स्वार्थ या हमारे अहंकार की अल्प सी तुष्टि के कारण ऐसी व्यक्तिनिष्ठा स्वयं में विकसित कर लेते हैं जो दूरगामी दृष्टिकोण से संपूर्ण समाज और सृष्टि के लिए घातक होती है। हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि वही दबंगता वरैण्य है जो विश्वात्मा के दृष्टिकोण से इस विश्व के लिए उपयोगी है। वही जुझारूपन उचित है जो अपने व्यक्तिगत हितों या अपनी छवि चमकाने के लिए नहीं बल्कि समाज के वृहद् हितों की पूर्ति के लिए चरितार्थ किया जा रहा है। हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि रजपूती का अर्थ व्यक्तिवाद कभी नहीं होता इसलिए रजपूती के नाम पर पनप रहे व्यक्तिवाद को सदैव हतोत्साहित करना ही समाज चरित्र की प्राथमिक आवश्यकता है, इसके लिए व्यक्तिनिष्ठा की अपेक्षा समाजनिष्ठा की साधना आवश्यक है और श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी समाजनिष्ठा की साधना है।

शाकम्भरी का चाहमान वंश

पृथ्वीराज जहां चौहान साम्राज्य का विस्तार कर एक शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता का निर्माण करना चाहता था, वहीं उत्तर भारत के अन्य शक्तिशाली राज्य किसी अन्य केन्द्रीय सत्ता के अधीन नहीं रहना चाहते थे। साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा रखने वाले कन्नौज के गहड़वाल वंश के साथ चौहानों का निरन्तर संघर्ष चलता था। गहड़वाल अपनी प्रभुसत्ता के मार्ग में चौहानों को प्रमुख बाधा मानते थे। विग्रहराज चतुर्थ के समय भी दिल्ली को लेकर चौहानों और गहड़वालों में संघर्ष हुआ था, जिसमें गहड़वाल शासक विजयचन्द्र को पराजय का सामना करना पड़ा था। पृथ्वीराज के समकालीन गहड़वाल शासक जयचन्द्र था जो एक साहसी, कुशल व महत्वकांक्षी शासक था, दोनों शासकों की साम्राज्य विस्तार की आकांक्षाओं ने उनके मध्य संघर्ष उत्पन्न कर दिया, वहीं कुछ इतिहासकार साहित्य ग्रंथों की कल्पना का आधार बनाकर जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता और पृथ्वीराज के विवाह को भी इस संघर्ष का कारण मानते हैं। यद्यपि इस संघर्ष का किसी की पक्ष के अनुकुल परिणाम नहीं आया परन्तु दोनों ही शासकों को सामरिक क्षति का सामना करना पड़ा। विगत लम्बे समय से भारत को तुर्क आक्रमणों का सामना करना पड़ रहा था जो कि साम्राज्य विस्तार की भावना और भारत की अतुलनीय धन सम्पदा के लिए लगातार आक्रमण कर रहे थे। पृथ्वीराज के पूर्वजों अर्णोराज और विग्रहराज के समय हुए तुर्क आक्रमणों को दोनों ने विफल कर दिया था और तुर्कों को बुरी तरह पराजित किया था। पृथ्वीराज के समय तुर्क आक्रमणकारी मोहम्मद गौरी (शहाबुद्दीन गौरी) था। मुहम्मद गौरी ने 1178 ई. में गुजरात पर आक्रमण किया था जहां काशहद के युद्ध में चालुक्य शासक भीम ने उसे बुरी तरह परास्त किया। इसके बाद मोहम्मद गौरी ने गजनी में अपनी स्थिति को मजूबत किया और अपने सामरिक बल को लगातार बढ़ाया। 1186 तक मोहम्मद गौरी ने अपना राज्य पंजाब तक विस्तारित कर लिया था और अब उसके राज्य की सीमाएं चौहान साम्राज्य से टकराने लगी थी। अलग-अलग साहित्यक ग्रन्थों से पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के मध्य हुए युद्धों का वर्णन मिलता है। ऐतिहासिक स्त्रोतों के अनुसार दोनों के मध्य अनेक युद्ध हुए लेकिन तेराईन में हुए द्वितीय युद्ध (1192 ई.) को छोड़कर प्रत्येक में पृथ्वीराज को विजय प्राप्त हुई। तराइन के युद्धों को छोड़कर हम मान सकते हैं कि बाकी अधिकांश युद्ध सैन्य झड़पे रही होंगी। मोहम्मद गौरी द्वारा पंजाब पर अधिकार कर लेने के बाद गौरी को पता था कि अब चौहानों के साथ युद्ध निश्चित है। भारत विजय की आकांक्षा मन में लिए वह एक विशाल सेना के साथ 1191 ई. में तराइन के मैदान में (हरियाणा के करनाल जिले में स्थित) आ गया, पृथ्वीराज ने मोहम्मद गौरी को बुरी तरह परास्त किया और गौरी की सेना युद्ध क्षेत्र से भाग गई। साहित्यक ग्रन्थों के अनुसार गौरी को बन्दी बना लिया गया और बाद में क्षमा याचना करने पर पृथ्वीराज द्वारा उसे मुक्त कर दिया गया। पराजित मोहम्मद गौरी ने पुनः युद्ध की तैयारी की और 1192 ई. में पुनः तराइन के मैदान में आ गया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

'कल्पना की उड़ान पूरी करने को उड़ना शुरू करें'

(पेज एक से लगातार)

इससे बड़ा सहयोग और कैसे मिल सकता है, जिससे भी मांगा सहयोग अपने आप आया और यह विश्वास होने लगा कि यह काम हमारा तो नहीं है। यह भगवान का काम है, भगवान स्वयं करा रहे हैं। तन सिंह जी की तपस्या को हम समझ सके कि नहीं समझ सके लेकिन भगवान समझता है और इसलिए इस आयोजन को जो भव्य रुप दिया गया उसका श्रेय हम लेना चाहें तो हम चोर हैं। क्योंकि हम दिखाई देते हैं भगवान दिखाई नहीं देता लेकिन जिसको भगवान दिखाई देता है वह समझ सकता है। दस दिन पहले समाचार आया कि यह स्थान तो कम पड़ेगा लेकिन दूसरी जगह तो मिल नहीं सकती थी और इससे बड़ा स्थान जयपुर में था भी नहीं। आंख मीच कर बैठना तो था नहीं तो कहा कि जहां जगह मिले वहां इसी में विस्तार करो। पुलिस वालों से पूछा, डॉक्टर्स से पूछा, वकीलों से पूछा। रोजाना कोई न कोई मीटिंग चलती रहती थी और सभी में इतना जबरदस्त उत्साह था कि मुझे लगा जैसे हमसे तो दूसरे लोगों को ज्यादा उत्साह है तो उससे हमको भी उत्साह मिला। कहा गया कि आप तो भीड़ को कंट्रोल करने की पुलिस की व्यवस्था करो, उनको बैठाने की व्यवस्था करो, पानी की व्यवस्था करो, लोग सुन सके ऐसी व्यवस्था करो। वह सारी की थी लेकिन वह भी थोड़ी गड़बड़ा गई थी और इसलिए कुछ लोगों को सुनाई नहीं पड़ा, कुछ लोगों को दिखाई नहीं पड़ा, कुछ लोगों को जगह नहीं मिली।

महिलाओं की बहुत जगह रखी थी लेकिन बीस हजार से ज्यादा महिलाएं आई तो उनके बैठने की समस्या भी आई पर उन महिलाओं ने किसी से कोई सहायता नहीं मांगी, अपने आप सब व्यवस्थित हो गया। गर्मी का सा माहौल हो गया था, जो सर्दी पड़ रही थी एकदम धूप में बदल गया और समय ऐसा था कि प्यास भी लग रही थी, बहुत लोग प्यासे भी रहे होंगे, पानी की व्यवस्था भी की गई थी लेकिन कहीं कोई हड़बड़ाहट नहीं हुई। मंच, जो आपने देखा, उस पर भी लोग आश्चर्य करते हैं। हमने एक योजना जरूर बनाई थी कि मुख्य मंच पर दो-तीन से ज्यादा व्यक्ति नहीं बैठेंगे और बाकी दो मंचों पर जो हमारे समाज के वरिष्ठ लोग हैं, राजनेता आदि हैं, वे बैठेंगे। बोलने के लिए जिन जिन लोगों को मौका मिला, उनको जो विषय दिया गया था उसी विषय पर बोले, जितना समय दिया गया उसी समय में बोले। 12:15 से 3:15 तक का कार्यक्रम रखा गया था। ठीक 12:15 बजे शुरू हुआ और ठीक 3:15 बजे समापन हो गया ताकि लोग ढंग से अपने घर जा सके। भोजन की व्यवस्था किसने की मुझे तो जानकारी नहीं है लेकिन अपने आप हो गई। पैसे की भी समस्या थी लेकिन विज्ञापन के रूप में पैसा भी आ गया, कोई कमी नहीं हुई। और किसने किसको प्रेरणा दी? कई-कई गांवों में, कई-कई शहरों में तो लगा था कि वहां से तो इतने लोग कैसे आएंगे, बाड़मेर से, जैसलमेर से, जोधपुर से आदि। पहले दिन तक कोई पता नहीं था लेकिन समाचार आया कि गाड़िया भर गई। तो सबको लाने वाला कौन था? कौन लेकर आया हमको? वह अदृश्य रूप में कोई शक्ति काम कर रही थी, जिसको हम तन सिंह जी की तपस्या कह दें या भगवान श्री कृष्ण का सुदर्शन चक्र कह दें। हेलीकॉप्टर वाले को किसने कहा था जो उन्होंने अपना पैसा लगाकर फूल बरसाए? उसको निराश कर दिया गया था कि हेलीकॉप्टर एक दिखावा हो जाएगा। तो आज तो दिखावा होना ही चाहिए, ऐसा कहकर लोगों ने मुझे उकसाया और हां भर ली। वह तो ऐसे खुश हुआ जैसे मेरा काम हो गया। उन्होंने परिवार सहित ऊपर उड़कर फूल बरसाए। एक बार का कहा था, उन्होंने तीन बार बरसाए, उसमें ऐसा आनंद आया उनको, उन्होंने फिर बाद में आ करके बताया। तो जो गए उनको आनंद आया, जिन्होंने देखा उनको आनंद आया, भवानी निकेतन वालों को आनंद आया, पुलिस वालों को आनंद आया, सरकार को आनंद आया, डर रहे थे पता नहीं इतनी भीड़ क्या करेगी, पर कुछ भी नहीं हुआ और ऐसा एक सफल आयोजन हुआ जिसके लिए बधाई के दौर चले। अब मैं जहां जाता हूं, बधाई देने आते हैं लोग। बधाई मैं आपको दूं कि आप मुझे दें? कौन किसको दे? ना मैंने किया ना आपने किया। हम सब को लाने वाला कोई और था उसको दो। आप लोगों ने भी ऐसी मीटिंग की होगी, आभार प्रकट करने की। सभी जगह पर इस प्रकार की मीटिंगों का दौर चला। विदेशों से भी बधाइयां आ रही हैं, अन्य जातियों की भी बधाइयां रही हैं। व्यक्तिगत रूप से मुझे जो जानते हैं वे भी आके कहते हैं कि भूतो ना भविष्यति, तो अंदर खुशी तो होती है लेकिन मैं जानता हूं कि यह किसने किया और इसे जिसने किया उसके प्रति श्रद्धावान बनें, नमनशील बने। उसको याद करके इसी तरह से कार्य करते जाएंगे तो निश्चित रूप से हमारे अंदर जो परिवर्तन लाना है, वो आएगा। परिवर्तन का मतलब बदलाव और प्रयत्न तो हमको ही करना पड़ेगा। जो दुष्प्रवृत्तियाँ हैं हमारे अंदर उनको हमको ही हटाना पड़ेगा। काम, क्रोध, द्वेष - यह सारे हमारे अंदर हैं, हम जानते हैं और उनको हम को हटाना पड़ेगा। यह भी हम जानते हैं कि किस प्रकार से आदमी, आदमी बनता है। इसलिए पहले हमको आदमी बनना है, इंसानियत हमारे अंदर होनी चाहिए और इंसानियत यह है कि मेरी वजह से किसी को कोई कष्ट ना हो।

हम रोज जांच कर सकते हैं कि मेरी वजह से किस-किस को कष्ट हो रहा है। उसको हम दूर करें तो निश्चित रूप से भगवान कदम-कदम पर हमारी सहायता करेगा। हम दो कदम चलेंगे तो वो सौ कदम हमारे नजदीक आएंगे और इससे बड़ा काम क्या होगा कि भगवान हमारे नजदीक आ जाए। तन सिंह जी ने कहा ईश्वर को प्राप्त करना है तो अपने हृदय को निर्मल करो। हृदय निर्मल कैसे होगा? सद्कर्म करने से। और सद्कर्म क्या है, उसका स्वरूप क्या बताया? उन्होंने बताया - स्वधर्मपालन। स्त्री के रूप में स्त्री का धर्म क्या है, शिक्षक के रूप में शिक्षक का धर्म क्या है ,विद्यार्थी के रूप में विद्यार्थी का धर्म क्या है, इन बातों पर हम इतना ज्यादा गौर नहीं करते हैं लेकिन वे ज्यादा महत्वपूर्ण है। वहां ज्यादा व्यापक प्रभाव पड़ता है उसका। हमारी इंसानियत की फसल किस प्रकार से पक करके तैयार होती हैं, वह वहां होती है। हम अपने आप में मियां मिठू बन जाए, यह पर्याप्त नहीं है। हमको अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए कि कोई हमारी प्रशंसा करें। नीचे नयन किए हुए श्रेष्ठ कार्य करते जाएं और श्रेष्ठ कार्य को गिनाने की आवश्यकता नहीं है, कोई शास्त्रों में ढूंढने की आवश्यकता नहीं है। हम सब जानते हैं। और नेष्ठ क्या है इसको भी हम जानते हैं। जो नेष्ठ हैं उस से किस प्रकार से बच सकते हैं, उसमें एक सहायक तत्व है श्री क्षत्रिय युवक संघ क्योंकि वह सामूहिक साधना करता है। फौज में अकेले आदमी को ट्रेनिंग देना इतना आसान नहीं होता जितना समूह में देना होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में वही प्रणाली है। यदि कोई कोयला भी है तो अंगारे के साथ रहकर के अंगारा बन जाता है। और दूसरा सूत्र है नियमितता और निरंतरता। अच्छी-अच्छी बातें हैं लेकिन इसको कभी काम में लें लें, कभी पढ़ लें, कभी सुन लें, श्री क्षत्रिय युवक संघ के किसी शिविर में जाकर आ जाए, उससे काम नहीं बनता है। जानकारी बढ़ती है और जानकारी एक अहंकार पैदा करती है कि मैं जानता हूं। नियमितता और निरंतरता का पालन किया जाना चाहिए। वह टूटनी नहीं चाहिए और वह टूटती है हमारी लापरवाही के कारण।। वह लापरवाही रहेगी तो हमारे जीवन में लचीलापन रहेगा और हम हर जगह मुड़ जाएंगे। आयाराम गयाराम बनते रहेंगे। हमको वैसा नहीं बनना है। सिद्धांत के प्रति पक्का रह करके, उस पर अपने आप को खरा कसके, कुंदन की तरह से खरा बनाने के लिए सुखों को जलाना पड़ता है। तो भी, किसी को सुनाना नहीं है कि हमने इतना कष्ट सहा है। हम हमारे भले के लिए यह कर रहे हैं और क्योंकि हमारे भले से ही मेरे परिवार का, मेरे समाज का, मेरे राष्ट्र का, मानवता का भला होता है इसलिए यह पूरा सूत्र जुड़ जाता है। उस पूरे सूत्र को जोड़ने के लिए इकाई बनती है मनुष्य का जीवन। हम अपने आप को तैयार रखें और तैयार रखकर के प्रतीक्षा ना करें। जो कर सकते हैं वह तुरंत करना शुरू कर देना चाहिए। अभी एक महीना हुआ है, बहुत आवाज आ रही हैं चारों तरफ से, स्त्रियों की, बालिकाओं की, दंपतियों की, शिविर के लिए। अब परीक्षाओं के दिन आ गए हैं इसलिए थोड़ा सहन और करना पड़ेगा। शिविर खूब लगेंगे और आप लोग ही लगाएंगे और आप लोग ही आएंगे, आप से ही घटित होगा, थोड़ा सा धैर्य रखें। यह बीमारी की अड़चन कम होते ही समाज में एक लहर दौड़ेगी और 75 वर्ष के बाद क्या, उसका पता चलेगा। अगले 25 साल कैसे होंगे, जब हम प्लेटिनम जुबली मनाएंगे उस समय श्री क्षत्रिय युवक संघ कहां होना चाहिए, हम कहां हैं, इन बातों की हम कल्पना कर सकते हैं और कल्पना की उड़ान तभी पूरी होती है जब हम उड़ना शुरू करते हैं। परमेश्वर हमको वह शक्ति और साहस दें जिसके कारण हमारे कदम कभी रुके नहीं। **जय संघ शक्ति।**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

26 दिसंबर 2021 को रविवारीय शाखा में पूज्य तन सिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 451 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि जिस प्रकार धरती पर सूर्योदय और सूर्यास्त क्रमशः आते हैं उसी प्रकार हमारे जीवन में सुख और दुख का चक्र भी निरंतर चलता ही रहता है। यह बिल्कुल स्वभाविक है कि मनुष्य को अपने जीवन में सुख-दुख उसी प्रकार सहन करने पड़ते हैं जिस प्रकार सर्दी गर्मी आदि ऋतुओं को सहन करना पड़ता है। यदि कोई इस बात को ना समझ कर सुख और दुख को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करना चाहता है अर्थात सदा सुखी रहना चाहता है और दुखों को स्वीकार नहीं करना चाहता तो उसका असफल होना निश्चित है। ऐसे व्यक्ति सदैव दुख की संभावना से भयभीत रहकर उपलब्ध सुख का भी आनंद नहीं ले पाते हैं और उनका पूरा जीवन दयनीय बन जाता है। माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने शाखा को संबोधित करते हुए कहा कि हीरक जयन्ती की सफलता पर गर्वित होना स्वाभाविक है लेकिन जो साधक जीवन में हैं उनको और अधिक विनयी होना चाहिए। सब कुछ ईश्वर द्वारा कराया जा रहा है। बर्बरीक द्वारा कृष्ण भगवान महाभारत का युद्ध लड़े जाना बताए जाने का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि सब कुछ करने कराने वाला परमेश्वर है, यह भाव बना रहे तो हममें विकार उत्पन्न नहीं होगा। अवतरण के संबंध में स्वयंसेवकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि सुख और दुःख स्वाभाविक है। उनके साथ बहें नहीं, उनका कारण ढूंढकर उसके अनुसार कर्म करें। सांघिक साधना में सुख और दुख हमारे लिए विचारणीय नहीं है, अपितु हमारे लिए हमारा उत्तरदायित्व ही विचारणीय है। जैसा शिक्षक कहे वैसा करते जाओ, उसमें कमी नहीं निकाले, मीनमेख न करें, अपना कुछ नहीं मिलाएं तो अवश्य ही संघ तत्व हमारे जीवन में पल्लवित पुष्पित होगा।

2 जनवरी 2022 को अवतरण संख्या 224 पर चर्चा करते हुये माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि हर क्षण, हर कदम हम पर प्रभु की कृपा बरसती है, पर हम इसको समझ नहीं पाते, इसका अनुमान ही नहीं लगा पाते और इसलिए सांसारिक मायाचक्र में जहाँ कहीं भी संघर्ष की आवश्यकता होती है वहाँ हम हार जाते हैं। हम ऐसा मान लेते है कि प्रभु हमसे रुष्ट हैं, प्रभु की कृपा होती तो क्या संकट आते? लेकिन ये सब अज्ञान है, अज्ञान के कारण ही हम ऐसा मानते हैं और नाराज हैं तो राजी करने के लिए पूजा-पाठ करते हैं। लेकिन क्या पूजा पाठ से उसकी प्राप्ति हो जाएगी? उससे तो केवल यह विश्वास दृढ़ होता है कि साध्य और साधक के बीच की दूरी मिटाने वाली कर्मनिष्ठा है। पूजा पाठ केवल इसलिए है कि हमको जिस साध्य की ओर जाना है उसके लिए कदम बढ़ाते रहें। साधना में प्रवृत्त होकर साध्य को हर समय, हर क्षण स्मरण नहीं रख सकते तब तक साध्यप्राप्ति की बात झुठी है। संघ में आने के बाद स्वयंसेवक को हर क्षण यह बात स्मरण रहे कि मैं संघ का स्वयंसेवक हूँ, अन्यथा साधना को ही साध्य मान लिया। ईश्वर तक हमें जाना है और हर क्षण यदि हमें ईश्वर का स्मरण रहे तो ही हमारी हर हलचल उस ओर बढ़ाने वाली होगी, संघर्षों में से गुजरते हुये आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी और यदि ऐसा नहीं है तो हमारी स्थिति ठीक उस कोल्हू के बैल की भाँति है जो जीवन भर एक ही स्थान पर चक्कर लगाता रहता है। भगवान की कृपा है कि हमें संघरूपी एक मार्ग मिला है और भगवान की कृपा को हम सदा याद रखें और भगवान की ओर हमारे कदम बढ़ते रहें, इसकी जागरूकता बनी रही तो हमारी गति रुकेगी नहीं। आगे स्वयंसेवकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि संघ में आना भी प्रभु की कृपा ही है और इस कृपा को हम स्वीकार करें, स्मरण रखें तो कदम आगे बढ़ते रहेंगे। साध्य तक पहुंचने के लिए कर्मनिष्ठा आवश्यक है। हर क्षण प्रभु का या साध्य का स्मरण रहे उसके लिए जागरूक होना पडता है। गफलत इसीलिए होती है कि हम प्रभु का स्मरण नहीं रख पाते हैं। प्रभु की कृपा हुई है तो उसकी ओर बढ़ने के लिए जो आवश्यक है वो करें। अगर वो हम नहीं कर रहे हैं तो प्रभु ने कृपा करके हमें एक अवसर तो दे दिया लेकिन उस अवसर का हम लाभ नहीं उठा रहे हैं और हमारा जीवन व्यर्थ जाएगा। संघ में केवल भौतिक उपस्थिति ही नहीं हो बल्कि हमारा जीवन ऐसा हो जैसा संघ चाहता है। 9 जनवरी को डायरी के अवतरण संख्या 249 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि इस अवतरण में सौरमंडल का उदाहरण देकर संघ की बात की गई है। जैसे सौरमंडल में सूर्य के आकर्षण के कारण विभिन्न ग्रह बंधे हुए हैं उसी प्रकार संघ में भी जो आता है उसका आधार संघ के प्रति आकर्षण ही है। उस आकर्षण के कारण ही हमको संघ अच्छा लगता है और जितना हम संघ के अर्थात अपने प्रेरक के नजदीक आएंगे उतना तपोबल अर्जन करना पड़ेगा और इसीलिए नजदीक आना सरल नहीं है। संघ जैसा चाहता है वैसा जीवन बनाने के लिए तपोबल की आवश्यकता होती है और उस तपोबल से ही किसी में निखार आता है लेकिन संघ के नजदीक आने वाला व्यक्ति यदि उस ताप से, जो उस पर लगने वाले अंकुश के रूप में होता है, उससे घबराता है और उसे सहन नहीं कर पाता तो वह दूर हट जाता है और जो उस ताप को सहन कर लेते हैं वे राख बन जाते हैं अर्थात अपने साध्य में मिल जाते हैं। अपने जीवन व्यवहार को उस प्रकार से चलाना जैसे हमारा निर्देशक, हमारा मार्गदर्शक चाहता है वही तपस्या है। प्रेम को तपस्या में परिवर्तित करने के लिए साधना आवश्यक है। जब तक साधना जागृत नहीं होती तब तक जो संघ के प्रति आकर्षण बना है वह आकर्षण हमको दूर-दूर ही घुमाएगा लेकिन तपस्या में रूपांतरित नहीं हो सकेगा।

आगे स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा की यदि प्रेम नहीं होगा तब तो कोई संघ की तरफ कदम ही नहीं बढ़ाएगा इसलिए प्रेम को भी तपस्या के समान ही बताया गया है। लेकिन यदि हम रुक गए तो प्रेम तो बना रहेगा किंतु साधना प्रारंभ नहीं होगी। जितने हम संघ के नजदीक आएंगे उतने ही हम पर अंकुश लगेंगे, बंधन लगेंगे, उन बंधनों को स्वीकार करने से ही साधना प्रारंभ होती हैं। संघ के किसी एक पक्ष से आकर्षित होकर हम संघ में आते हैं लेकिन यदि उस एक पक्ष तक ही हम सीमित रह जाए तो हम साधक नहीं बन सकते। संघ को सर्वात्मना स्वीकार कर उसमें अपने आप को पूरी तरह से लीन कर दें तो ही संघ के अनुसार हमारा जीवन बन सकेगा। 16 जनवरी को अवतरण संख्या 247 का अर्थ समझाते हुए उन्होंने कहा कि गलती करना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि गलती करनी चाहिए। गलती होने का अर्थ है कि जो सामान्य प्रवाह है, सामान्य नियम और सिद्धांत है उनके साथ असंगति उत्पन्न हो जाए। यह प्रश्न भी उठता है कि जब ईश्वर के रूप में एक सम्बद्ध और सूत्रबद्ध सत्ता संसार का नियंत्रण करती है तो फिर इस असंगति का क्या कारण हो सकता है? लेकिन यदि हम गहराई से विचार करें तो वह असंगति केवल हमारे दृष्टिकोण से में ही है, वास्तव में ईश्वर कि सृष्टि में कुछ भी असंगत नहीं है। हम घटनाओं के उद्देश्य को, उसके कारणों को, अपनी सामान्य बुद्धि से नहीं समझ पाते इसी कारण हमें असंगति दिखाई देती है। संघ में भी जब हम काम करते हैं तब हम से अनेक गलतियां होती हैं जो स्वाभाविक है लेकिन उन गलतियों से सीख कर जब हम आगे बढ़ते हैं तो हमें जो प्रेरणा मिलती है, वह प्रेरणा बहुत कीमती है। इस दृष्टिकोण से साधक को अपनी गलतियों से सीख कर उन्हें दोहराने से बचना चाहिए और निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जितनी कठिनाइयां हम सहन करेंगे उतना ही अधिक हम मजबूत बनेंगे और नई कठिनाइयों का सामना कर सकेंगे क्योंकि साधना पथ में कठिनाइयों का आना अनिवार्य है। स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि गलती होना स्वाभाविक है लेकिन साधक को अपने आप को कभी भी छूट नहीं देनी चाहिए। जब भी सावधानीपूर्वक मार्ग पर चलते हुए भी कोई गलती हो जाए तो संकल्प पूर्वक उस गलती को फिर से ना दोहरा कर आगे बढ़ना चाहिए। यही विकास का मार्ग है। संघ मार्ग पर चलते हुए आंतरिक और बाह्य विरोध, ईर्ष्या, आलोचना आदि भी स्वाभाविक है लेकिन इनसे पार जाकर जिस एकता और प्रेम की प्राप्ति होती है वह अधिक श्रेष्ठ और स्थाई है। साधक को चाहिए कि वह धैर्य पूर्वक अपने मार्ग पर डटा रहे और परिणामों की चिंता ना करके अपने कर्तव्य पर ही ध्यान दे। इसी प्रकार 23 जनवरी को डायरी के अवतरण संख्या 213 पर चर्चा में उन्होंने बताया कि इस अवतरण में अपने आप के बारे में बताया है तनसिंहजी ने कि जब किसी साधक में विकार पैदा होता है तो उनका अंतर क्या कहता है। हम प्रायः जो विरोध की बात करते है तो हम बाहर देखते है लेकिन विरोध अन्दर भी होता है जो विकार के रूप में पनपता है। किसी व्यक्ति में महत्वाकांक्षा जग गई, अहंकार पैदा हो गया या कोई ऐसी वृत्ति पैदा हो गई जो श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना में बाधा बनती है तो वो विकार है। जब भी किसी साधक में ऐसा कोई विकार पैदा होता है तब पूज्य श्री के अन्तर से केवल एक ही आवाज आती है कि जीवन बहुत थोड़ा है और काम बहुत ज्यादा करना है। अर्थात विकारो में हम उलझे नहीं, पश्चाताप नहीं करें लेकिन यह याद रखें कि 'जीवन बहुत थोड़ा है और काम बहुत अधिक' अतः काम करते जाएं। विचलित न हों, बराबर कर्म में लगे रहें। हमारे पीछे चलने वाले ऐसे लोग भी होंगे जो जीवनभर असहमत और असंतुष्ट होंगे और हमारे जाने के बाद हमारे लक्ष्य को पहचानेंगे। जब हम सामुहिक साधना में चलते हैं तो सभी तरह के लोग आयेंगे। कितना उपयोगी, पवित्र व सार्थक मिशन लेकर तनसिंह जी आए थे किन्तु कितने लोग उस मिशन को उनके रहते पहचान सके? किन्तु साथ चलने वाले ऐसे भी लोग होंगे जो हर प्रकार का त्याग करके भी ऐसा नहीं मानते कि मैंने त्याग किया है। दोनों प्रकार के जो लोग हैं उनमें दूसरी प्रकार के लोगों के प्रति शिक्षक की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। जो समर्पित होकर काम कर रहे है समाज में या संघ में, जो साथ मिलकर रहें, साथ मिलकर चलते रहें, एक दूसरे से टकराये नहीं और अधिकारों की बात नहीं करें, वे इसी प्रकार के लोग हैं जो किसी भी त्याग को बड़ा नहीं मानते। उनके लिए एक ऐसा बड़ा समूह बनाना है जिसमें कोई विकार पैदा ना हो, अधिकारों की बात न हो। आगे प्रश्नोत्तर के दौरान उन्होंने बताया कि पूज्य श्री तनसिंह जी को वे ही प्रिय हैं जो त्याग करके भी उसे बड़ा नहीं मानते, अधिकारों की बात नहीं करते, क्योंकि पूज्य श्री को अपनी उपलब्धियाँ इस पीढ़ी में साकार होती दिखाई देती है। जिसके निर्माण में अनेकों शक्तियों का योगदान होता है उनमें संकरता आ जाती है। इस संकरता से हमें बचना है और जैसा तनसिंह जी चाहते हैं वैसा बनना है, ये भाव बना रहना चाहिए।

30 जनवरी को डायरी के अवतरण संख्या 539 पर चर्चा करते हुये माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि जब तक हम अपने आप को नहीं सँवारेंगे तब तक संघ क्या चाहता है न तो वो पता चलेगा और ना ही संघ के काम को विस्तार दिया जा सकेगा, उसका सही तरीका क्या है न वो जान पाएंगे। जब तक हम अपने आप को नहीं पहचानते तब तक जो हम अपने सामने उपलब्ध अवसर को भी नहीं पहचान पाते। हमें क्या करना चाहिए यह हमें बताया जाता है लेकिन हम कहीं न कही अन्यत्र उलझ जाते हैं और ऐसा होने पर हम स्वयं भटक जाते हैं, खो जाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने आप को पहचानें अर्थात अपने आप को सँवारें। जब तक हमने अपने जीवन को नहीं सँवारा तब तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का जो सार है, उस सार को हम सही ढंग से नहीं पहचान सकते। पूज्य तनसिंह जी ने एक सहगीत में भी लिखा है - 'अपने आप को उठाना सारी कौम को उठाना।' जब तक स्वयं को नहीं सुधारा तब तक हम चाहें कि समाज को हम सुधार दें वो संभव नहीं है। समाज हमारा कार्यक्षेत्र है और समाज में जाने से पहले हमारी तैयारी है या नहीं इस बात पर हमें विचार करने की आवश्यकता है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ एक का शेष)

मेवाड़ व वागड़...

संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली ने कहा कि श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का आधार श्री क्षत्रिय युवक संघ है इसलिए हमें संघ के दर्शन और कार्यप्रणाली को समझने के हर अवसर का लाभ उठाना चाहिए। केन्द्रीय समिति के सदस्य दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह ने फाउंडेशन से जुड़े लोगों का एक शिविर उदयपुर के आस पास रखने का सुझाव दिया जिस पर चर्चा के बाद तय किया गया कि आगामी अप्रेल माह में ऐसा शिविर रखा जाएगा। कार्यक्रम में सभी जिलों की जिला समितियों के साथ साथ इस क्षेत्र से केन्द्रीय समिति में नामित सदस्यों ने भी भाग लिया। 30

जयपुर

जनवरी को ही जयपुर जिला समिति की बैठक संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में रखी गई। सभी सदस्य आपस में परिचित हुए एवं पुष्कर की केन्द्रीय बैठक में हुए निर्णयानुसार फरवरी माह में प्रति सप्ताह कार्यक्रम रखने का निर्णय किया। बैठक में संभागप्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर भी उपस्थित रहे। 9 फरवरी को बाड़मेर जिला समिति की बैठक बाड़मेर में रखी गई जिसमें प्रत्येक तहसील से जिला सहयोगी उपस्थित हुए। बैठक में केन्द्रीय बैठक में तय कार्ययोजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई एवं तदनुसार दायित्व सौंपे गये। 10 फरवरी की बीकानेर टीम की बैठक रखी गई जिसमें आगे की कार्ययोजना का निर्धारण किया गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

बालोतरा

तनायन

जोधपुर और बालोतरा...

75 वर्ष का समय एक व्यक्ति के जीवन में बहुत बड़ा कालखंड होता है लेकिन समाज के लिए यह बहुत छोटी अवधि है। श्री क्षत्रिय युवक संघ का समाज जागरण का कार्य भी इसीलिए अनेक पीढ़ियों का कार्य है। हम सबके मिलने से ही संघ बनता है इसलिए हमको अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना है और अपने अंदर की बुराइयों को दूर करना है। कार्यक्रम में बालोतरा, सिवाना, पादरू, कल्याणपुर, पाटोदी, गिड़ा, बायतु आदि क्षेत्रों से समाजबंधु सम्मिलित हुए।

(पृष्ठ छह का शेष) शाखा अमृत

संघ चाहता है कि हम चिंतन करें कि जैसा संघ मुझे कह रहा वैसा क्या मैं चल रहा हूँ? जैसा संघ चाहता है क्या वैसी मेरी हलचल है, वैसा मेरा व्यवहार है? अगर नहीं है तो क्या कमी है और जो कमी है उसको दूर करें। इस प्रकार हम अपने जीवन को सँवारे, अपने जीवन को संघ के अनुरूप बनायें तभी हम संघ की बात को आगे भी पहुंचा पाएंगे। स्वयंसेवकों के प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने बताया कि अगर हमने अपने आप को नहीं सँवारा, अगर हमने अपने आप को संघ के आदर्श स्वयंसेवक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया तो हम अन्य लोगों को प्रभावित नहीं कर पायेंगे। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि हम फील्ड में ही न जायें। वह तो करना ही है क्योंकि लोकसंग्रह का काम है हमारा। अतः प्रयास तो चलता रहेगा लेकिन इसमें सफलता तभी मिलेगी जब हम अपने निर्माण को प्राथमिकता देंगे। 6 फरवरी को डायरी के अवतरण संख्या 538 पर चर्चा करते हुये उन्होंने कहा कि संघ में आने वाला जब संघमय बनने लगेगा है तो अन्य लोग उसे कहेंगे कि क्यों समय बर्बाद कर रहे हो, इसमें क्या सीखोगे? इतना समय तुम अपनी पढ़ाई, नौकरी या व्यापार में लगाओ। इस प्रकार उसे फुसलाते हैं। फुसलाने वाला भी ऐसा इसलिए करता है क्योंकि उसका स्वभाव ऐसा ही है, उसने संसार में आकर यही सीखा है और इसलिए अन्यों को भी बहकाता है। संघ में जो नये लोग हैं उनको भी इस तरह की बहकावे की बातें सुननी पड़ती है, इससे कई बार उनके खुद के मन में भी शंकाएं आती है लेकिन उन सब शंकाओं को दूर करके वो खुद विचार करे, मंथन करे कि ये जो कह रहे हैं इसमें सार है या संघ जो कह रहा है उसमें सार है। मेरा जीवन वहाँ अच्छा बनेगा या यहाँ। इस प्रकार के चिंतन से ही धीरे-धीरे वो अपने स्वभाव को दृढ़ कर सकता है। जिस व्यक्ति के मन में उत्सुकता होती है वो व्यक्ति सभी जगह आगे बढ़ सकता है। हालांकि हमारी पवित्रता को बहकाने की विधियाँ भी संसार में है किन्तु जो संघ के साथ चलेगा, जो नियमित रूप से कार्य करेगा उसमें परिवर्तन निश्चित है। आगे प्रश्नोत्तर के दौरान उन्होंने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ ही एकमात्र समाधान है। हमने जो संघ का शिक्षण ले रखा है, उसे और दृढ़ बनाना है। ऐसा शिक्षण बाहर कहीं नहीं मिलेगा, इसलिए संघ का ही सान्निध्य निरंतर प्राप्त करना होगा।। संघ जैसा कहता है वैसा अपने जीवन में उतारते जाएं और साथ ही अपना आत्मावलोकन भी करते जाएं।

(पृष्ठ चार का शेष)

शाकम्भरी... पृथ्वीराज भी अपनी सेना के साथ तराइन के मैदान में आ गया था, लेकिन लगातार सैन्य अभियानों के कारण इस युद्ध से पूर्व तक पृथ्वीराज के अनेक योग्य सेनानायक वीरगति को प्राप्त हो चुके थे और सामरिक क्षमता भी कम हो चुकी थी। दोनों सेनाएं जब मैदान में आमने-सामने थी तब मोहम्मद गौरी ने छल कपट का सहारा लिया और संधिवार्ता की आड़ में तब आक्रमण किया जब चौहान सेना प्रातःकालीन शौचादि-स्नान कार्य में व्यस्त थी। पृथ्वीराज और चौहानों ने अद्भुत पराक्रम के साथ युद्ध किया, परन्तु शत्रु की विशाल सेना और छल नीति से पृथ्वीराज को पराजय का सामना करना पड़ा। जहां कुछ इतिहासकार युद्ध में ही पृथ्वीराज को वीरगति प्राप्त होना बताते है वहीं कुछ पृथ्वीराज की मृत्यु गजनी में होना बताते है। पृथ्वीराज अपने समय का महान सेनानायक योद्धा था। जिसका राज्य सतलज से बेतवा वहीं हिमालय से आबू पर्वत तक विस्तारित था। योद्धा होने के साथ वह विद्वान और विद्वानों का संरक्षक भी था। उसके दरबार में चंदरबरदाई, जयानक, विद्यापति गौड़, पृथ्वीभट्ट, वागीश्वर, जर्नादन जैसे विद्वान आश्रय पाते थे। पृथ्वीराज भारतीय इतिहास के महानतम सम्राटों में से एक थे। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ एक का शेष)

माननीय संरक्षक श्री...

इस दौरान सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान पहुंच कर बालिकाओं से मिले एवं व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली। तत्पश्चात माननीय संरक्षक श्री अपने गांव रोलसाहबसर पधारे जहां अपने परिवार जनों से स्नेह पूर्ण भेंट की तथा ग्रामीणों से भी मुलाकात की। 6 फरवरी को आप पुनः संघ शक्ति पधारे।

स्व. फूलसिंह लीलकी की पत्नी का देहावसान

संघ के निष्ठावान स्वयंसेवक स्व. फूलसिंह लीलकी की पत्नी **श्रीमती सिरेकंवर** का 9 फरवरी को देहावसान हो गया। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिजनों को हिम्मत प्रदान करें।

श्री बहादूर सिंह मालारी का देहावसान

पाली जिले में संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **श्री बहादूर सिंह मालारी** का 95 वर्ष की आयु में 6 फरवरी को देहावसान हो गया। इनका प्रथ शिविर मई 1948 में कुचामन उ.प्र.शि. था। कालांतर में आप नियमित सम्पर्क में नहीं रह पाए। आपने कुल 7 शिविर किए। पथप्रेरक परिवार इनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं परमेश्वर से इन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

श्री बहादूर सिंह

श्री शेरसिंह रिड़मलसर का देहावसान

जोधपुर में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **श्री शेरसिंह रिड़मलसर** का 2 फरवरी को देहावसान हो गया। आप सितंबर 1964 में हर्ष में आयोजित शिविर से संघ के संपर्क में आये एवं अपने जीवन में संघ के 13 शिविर किए। पथप्रेरक परिवार इनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं परमेश्वर से इन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

श्री शेरसिंह रिड़मलसर

श्री केशरसिंह खोरी का देहावसान

शेखावाटी में श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **केशरसिंह खोरी** का 1 फरवरी को देहावसान हो गया। आप नवंबर 1959 में मंशामाता उ. प्र. शि. से संघ के संपर्क में आये और जीवन में कुल 70 शिविर किए। विगत लंबे समय से आप बीमार थे एवं कहीं भी आना जाना संभव नहीं था। पथप्रेरक परिवार इनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं परमेश्वर से इन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

केशरसिंह खोरी

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय सहयोगी

श्री नरेन्द्र सिंह तेजमालता

को सहायक अभियन्ता से अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, राजस्थान के पद पर पदोन्नत होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

- बाबू सिंह बैरसियाला
- सांवल सिंह मोढ़ा
- हरि सिंह बैरसियाला
- गिरधर सिंह जोगीदास का गांव
- भगवान सिंह तेजमालता
- भवानी सिंह रावतरी
- हरि सिंह सांकड़ा
- शेर सिंह जोगीदास का गांव
- खंगार सिंह झलोड़ा
- भूर सिंह मोढ़ा
- हाकम सिंह देवड़ा
- भोजराज सिंह तेजमालता
- धर्मपाल सिंह आसकन्द्रा
- चतुर्भुज सिंह तेजमालता
- अमर सिंह पारेवर
- मग सिंह लाठी
- वीरेंद्र सिंह आसकन्द्रा
- हिन्दू सिंह म्याजलार
- चंदन सिंह मूलाना
- कंवराज सिंह सेतरावा
- अमान सिंह पारेवर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org